



वैवाहिक कलह, मतभेद और पुनर्विवाह के सूत्र

Arpita Nath द्वारा • समय एवं फलित • 2026-09-16

वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, वैवाहिक कलह (Kalesh) का परिणाम हमेशा तत्काल कानूनी तलाक के रूप में नहीं होता है। अक्सर, यह पुराने भावनात्मक तनाव, कटु संवाद, अहं के टकराव और घरेलू अशांति के रूप में प्रकट होता है।

जब जुनून और प्रेम के प्राथमिक प्राकृतिक कारक (मंगल और शुक्र), दैवीय रक्षक (बृहस्पति) और घरेलू शांति की नींव (चतुर्थ और नवम भाव) अशुभ युतियों से प्रभावित होते हैं, तो गृहस्थी शांति का स्थान बनने के बजाय युद्ध का मैदान बन जाती है।

1. सप्तम भाव और प्रमुख कारकों पर पाप ग्रहों का प्रभाव

• **सप्तम भाव में राहु और शनि पर मंगल की दृष्टि:** यह वैवाहिक जीवन के लिए सबसे अधिक अशांत करने वाले योगों में से एक है। जब राहु (जुनून/भ्रम) और शनि (उदासीनता/विलंब) सप्तम भाव में स्थित हों और उन पर आक्रामक मंगल की दृष्टि पड़ रही हो, तो तीखी बहस, अचानक गुस्सा और गंभीर तनाव रोजमर्रा की बात बन जाते हैं।

• **पीड़ित और कमजोर गुरु (बृहस्पति):** गुरु सहनशीलता, नैतिकता और ज्ञान के दैवीय आधार के रूप में कार्य करते हैं। जब गुरु कमजोर, अस्त, नीच के हों या प्रकार्यात्मक पापी ग्रहों द्वारा अत्यधिक पीड़ित हों, तो विवाह में क्षमा करने, समझौता करने और दार्शनिक संतुलन बनाए रखने की स्वाभाविक क्षमता समाप्त हो जाती है।

• **बलवान शनि और शुक्र का संबंध:** जब एक शक्तिशाली शनि युति या निकट दृष्टि के माध्यम से शुक्र पर प्रभाव डालता है, तो यह प्रेम संबंध में भावनात्मक नीरसता, अत्यधिक बंदिशें, संदेह या एक नीरस और केवल लेन-देन जैसा व्यवहार ला देता है।

• **मंगल का अत्यधिक पीड़ित होना:** मंगल वैवाहिक उत्साह, आकर्षण और शारीरिक ऊर्जा का संचालन करता है। जब राहु-केतु (छाया ग्रहों) या शत्रु ग्रहों की दृष्टि से मंगल अत्यधिक पीड़ित हो जाता है, तो स्वस्थ आत्मविश्वास बेतुके गुस्से, आक्रामकता या दबी हुई नाराजगी में बदल जाता है।

2. संवेदनशील शुक्र की स्थितियाँ (कलह की जड़)

शुक्र परस्पर आकर्षण, वैवाहिक सुख और साझेदारी के आराम को नियंत्रित करता है:

• **तीन लगातार भावों में शुक्र, राहु और मंगल (शुक्र \to राहु \to मंगल):** जब ये तीन ग्रह इसी क्रम में लगातार भावों में बैठते हैं, तो इच्छा (शुक्र) अतृप्त लालसाओं (राहु) द्वारा बढ़ जाती है और तुरंत संघर्ष तथा आक्रामकता (मंगल) से टकराती है। यह स्थिति अत्यधिक तनाव, अस्थिरता और रिश्तों में निरंतर उतार-चढ़ाव पैदा करती है।

• **सूर्य के वर्गों में सूर्य के निकट सिंह राशि में शुक्र:** अग्नि तत्व की सिंह (Leo) राशि में सूर्य के अत्यधिक निकट स्थित शुक्र, विशेष रूप से जब यह सूर्य के वर्ग कुंडलियों में भी दोहराया जाता है, तो तीव्र अहंकार के टकराव, घमंड और प्रभुत्व की माँगों के कारण वैवाहिक कोमलता को नष्ट कर देता है।

• **7वें भाव के संदर्भ में सूर्य और चंद्रमा से घिरा शुक्र:** वैवाहिक कारक ग्रह का दोनों ओर से घिरा होना (पापकर्तरी जैसी स्थिति), जो भावनात्मक स्वभाव (चंद्रमा) और अधिकार/अहंकार (सूर्य) को निरंतर ध्रुवीकरण के अधीन रखता है, जिससे घरेलू अस्थिरता उत्पन्न होती है।

3. नींव के भावों पर अशुभ प्रभाव: चतुर्थ और नवम भाव

• **चतुर्थ और नवम भाव के स्वामियों की नीच स्थिति:**

• चतुर्थ भाव घरेलू सामंजस्य, भावनात्मक शांति (सुख) और घर के वातावरण का प्रतिनिधित्व करता है।

• नवम भाव धर्म, नैतिक सत्यनिष्ठा और ईश्वरीय कृपा (भाग्य) का प्रतिनिधित्व करता है।

- जब चतुर्थ और नवम दोनों भावों के स्वामी एक साथ नीच राशि में हों, तो घरेलू सुख छिन्न-भिन्न हो जाता है, जिससे वैवाहिक जीवन निरंतर अशांति और नैतिक मतभेदों के प्रति संवेदनशील हो जाता है।

- **द्वितीय भाव में मंगल:** वाणी भाव (वाक् भाव), पारिवारिक परंपरा और ससुराल के भाव में आक्रामक मंगल की उपस्थिति कठोर व कटु संवाद और जीवनसाथी के परिवार या ससुराल वालों के साथ बार-बार तनाव का कारण बनती है।

4. जटिल ग्रहीय संबंध: मंगल और गुरु

- **गुरु की राशि में मंगल, जिस पर गुरु की दृष्टि हो:** यद्यपि गुरु की दृष्टि आमतौर पर रक्षात्मक मानी जाती है, लेकिन धनु या मीन राशि में स्थित मंगल पर जब गुरु की सीधी दृष्टि पड़ती है, तो यह तीव्र वैचारिक टकराव, नैतिक श्रेष्ठता का अहंकार और ऐसे अडिग वाद-विवाद उत्पन्न कर सकता है जहाँ कोई भी साथी पीछे हटने को तैयार नहीं होता।

5. बहु (एक से अधिक) विवाह के योग

शास्त्रीय ग्रंथ रिशतों में अस्थिरता को द्विस्वभाव राशियों और कई ग्रहों के प्रभावों से जोड़ते हैं:

- **द्विस्वभाव राशि में पीड़ित सप्तमेश:** यदि सप्तम भाव का स्वामी किसी द्विस्वभाव राशि (मिथुन, कन्या, धनु या मीन) में स्थित हो और पाप ग्रहों से पीड़ित हो, तो जातक का वैवाहिक जीवन अक्सर दोहरे मोड़ पर आ जाता है, जिससे कई रिश्ते या पुनर्विवाह की संभावना बनती है।

- **सप्तम या अष्टम भाव में पीड़ित सप्तमेश:** जब सप्तमेश सप्तम भाव में स्थित हो (साझेदारी पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करते हुए) या परिवर्तन और आकस्मिक अंत के अष्टम भाव में जाकर पाप ग्रहों से पीड़ित हो, तो यह अक्सर पहले विवाह के टूटने और उसके बाद दूसरे विवाह का कारण बनता है।

परम शमनकारी कारक: बृहस्पति (गुरु) की दृष्टि

भले ही किसी कुंडली में क्लेश या एकाधिक विवाह के गंभीर संकेत हों, शास्त्रीय ग्रंथ कृपा का एक महत्वपूर्ण नियम प्रदान करते हैं:

सप्तम भाव, सप्तमेश या शुक्र पर किसी पीड़ित-रहित (शुभ) बृहस्पति की प्रत्यक्ष दृष्टि (Drishti) इन दोषों को काफी हद तक कम कर देती है।

बृहस्पति की दिव्य दृष्टि क्रोध को शांत करती है, नैतिक संयम लाती है, कानूनी बंधनों की रक्षा करती है और अक्सर पारिवारिक विवादों को ऐसे टूटन में बदलने से रोकती है जिसे ठीक न किया जा सके।

<https://astroarpitanath.com/hindi/marital-friction-multiple-marriages/>

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।